✺ 21 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] यहाँ न कोई शास्त्र हैं, न मनुष्य हैं। यहाँ सिखाने वाला एक ही रूहानी बाप है जो आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा ही धारण करती है। परमपिता परमात्मा में यह सारा ज्ञान है, 84 के चक्र का उनमें नॉलेज है, इसलिए उनको भी स्वदर्शन चक्रधारी कह सकते हैं। हम बच्चों को भी वह स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे हैं।

2] तुम जानते हो इन सन्यासियों आदि को ज्ञान तब मिलता है जबकि विनाश का समय होता है। भल तुम उन्हें ऐसे निमन्त्रण देते रहो लेकिन यह ज्ञान उनके कलष में जल्दीं नहीं आयेगा। जब विनाश सामने देखेंगे तब मानेंगे। उन्हों का पार्ट ही अन्त में है। तुम कहते हो अब विनाश आया कि आया, मौत आता है। वह समझते हैं इन्हों के यह गपोड़े हैं।

3] तुम इस दु:ख से छूटकर सुख में जाते हो। यहाँ तमोप्रधान होने कारण तुम बीमार आदि होते हो। यह सब रोग मिट जाने हैं। मुख्य है ही पढ़ाई, इनसे ट्रांस आदि का कनेक्शन नहीं है।

4] बाप ने बताया है तुमको यहाँ तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। आत्मा को ही बनना है। आत्मा ही मेहनत कर रही है। इसी जन्म में तुम्हें जन्म-जन्मान्तर की मैल को उतारना है। यह है मृत्यलोक का अन्तिम जन्म फिर जाना है अमरलोक। आत्मा पावन बनने बिगर तो जा नहीं सकती। हिसाब-किताब सबका चुक्तू हो जाना है।

✺ योग-

1] मीठे बच्चे– याद से विकर्म विनाश होते हैं, ट्रांस से नहीं। ट्रांस तो पाई पैसे का खेल है, इसलिए ट्रांस में जाने की आश नहीं रखो। ज्ञान-योग में ट्रांस का कोई कनेक्शन नहीं। मुख्य है पढ़ाई।

2] सन्यासियों को सिर्फ कहना है कि बाप को याद करो। यह भी बाप ने समझाया है कि तुमको आँखे बन्द नहीं करनी हैं। आंखे बन्द होंगी तो बाप को कैसे देखेंगे। हम आत्मा हैं, परमपिता परमात्मा के सामने बैठे हैं। वह देखने में नहीं आता है, लेकिन यह ज्ञान बुद्धि में है।

3] बाप तो एक ही बात समझाते हैं– तुम जो अधाकल्प देह-अभिमानी बन पड़े हो, अब देही-अभिमानी बन बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों, इसको याद की यात्रा कहा जाता है। योग कहने से यात्रा नहीं सिद्ध होती। तुम आत्माओं को यहाँ से जाना है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। तुम अभी यात्रा कर रहे हो। उन्हों का जो योग है, उसमें यात्रा की बात नहीं। हठयोगी तो ढेर हैं। वह है हठयोग, यह है बाप को याद करना। बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे अपने को आत्मा समझो।

✺ धारणा-

1] तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जाती है जो इस दुनिया में होते हुए उनको देखते नहीं हैं। खाते-पीते भी तुम्हारी बुद्धि उस तरफ हो।

2] अब हमको घर और स्वर्ग में जाना है तो उसके लिए पावन भी जरूर बनना है। याद की यात्रा से पावन बनना है।

3] बाप कहते हैं याद की यात्रा भूलो मत। कम से कम 8 घण्टा तो जरूर याद करो।

✺ सेवा-

1] बाप का बच्चा बना फिर बाप से पढ़ना और पढ़ाना है। बाबा कहते हैं तुम म्युज़ियम खोलो, आपेही तुम्हारे पास आयेंगे। बुलाने की तकलीफ नहीं होगी। कहेंगे यह ज्ञान तो बड़ा अच्छा है, कभी सुना नहीं है। इसमें तो कैरेक्टर सुधरते हैं।